ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-6* Issue-9* October (Part-1) 2021
Innovation The Research Concept

वैश्वीकरण एवं सामाजिक सुरक्षाः मुददे एवं चुनौतियाँ
Globalization and Social Security: Issues and Challenges

Paper Submission: 10/10/2021, Date of Acceptance:21/10/2021, Date of Publication: 24/10/2021

मीरा सिंह
एसोसियेट प्रोफेसर
समाजशास्त्र विभाग,
आगरा कॉलेज, आगरा,
उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश

वैश्वीकरण एक ऐसी प्रक्रिया है जो आज दुनिया भर के देशों में देखने को मिलती है। इस प्रक्रिया के माध्यम से संस्कृति और उद्योग धंधों का विस्तार, मिशनरी गतिविधियाँ तकनीकी परिवर्तन आदि कई देशों में फैल जाते हैं। इस प्रक्रिया के परिणाम स्वरूप विभिन्न देशों के मूल निवासी एक-दूसरे के निकट आ जाते हैं। आज पर्यावरण का संकल्प विकसित और विकासशील दोनों देशों के सामने किसी भयानक दानव की तरह मुंह फाड़े खड़ा है। कुछ ऐसी ललित कलायें या संगीत के प्रकार हैं जो स्थानीयता से बाहर निकलकर दुनियाभर में पहुंच गयी हैं। पंूजीवाद और उदारीकरण वैश्वीकरण की ही उपज है। इसने उद्योग धंधों को अन्तर्राष्ट्रीय बना दिया है। आज सामाजिक जीवन पूरी तरह से उपभोक्तावाद की गिरफ्त में है। आज सम्पूर्ण दुनिया एक सामाजिक व्यवस्था बन गयी है जिसके अन्तर्गत लोगों के सम्बन्ध अधिकाधिक एक-दूसरे के निकट आ गये हैं। वैश्वीकरण अनिवार्यतः बहुलवादी है यदि यह बाजारवाद का प्रणेता है तो यह एक नई संस्कृति के विकास का माध्यम भी है। इस प्रक्रिया की गतिशीलता परस्पर विरोधी है, यह जोड़ती है तो विखण्डित भी करती है कुछ विरोधी मूल्यों के होते हुए भी आज दुनियाभर में विश्वसंस्कृति, विश्व समाज आदि के नारे पूरे जोर-शोर के साथ दिये जा रहे है। यह प्रक्रिया बडी शक्तिशाली है।

Globalization is a process that is seen today in countries all over the world. Through this process, the expansion of culture and industries, missionary activities, technological changes etc. spread to many countries. As a result of this process the natives of different countries come closer to each other. Today, the resolve of the environment is standing in front of both developed and developing countries like a terrible demon. There are some fine arts or forms of music that have spread out of the locality to the world. Capitalism and liberalization are the product of globalization. This has made the industries international. Today social life is completely in the grip of consumerism. Today the whole world has become a social system, under which the relations of people have come closer to each other. Globalization is essentially pluralistic, if it is the precursor of marketism, then it is also a vehicle for the development of a new culture. The dynamics of this process is contradictory, it connects and breaks apart. Despite some conflicting values, today the slogans of world culture, world society etc. are being given loudly all over the world. This process is very powerful.

मुख्य शब्दः वैश्वीकरण, सामाजिक सुरक्षा, पूँजीवाद, उदारीकरण, प्रजातंत्र, चुनौतियॉ।
Keywords: Globalisation, Social Security, Capitalism, Liberalisation, Democracy, Challenges.

प्रस्तावना

वर्तमान समय मे मानव जीवन के लगभग सभी पक्ष अपने निवासी देश से हजारों और लाखों मील दूर स्थित संगठनों की गतिविधियों और सामाजिक ताने-बाने से प्रभावित होने लगे हैं। सम्पूर्ण विश्व एक एकिक समाज-व्यवस्था का रूप धारण करता जा रहा है। परिवर्तन का यह रूप एक ऐसे विश्व की परिकल्पना प्रस्तुत करता है, जिसमें सभी सीमा रेखायें और सीमायंे उत्तरोत्तर धीरे-धीरे ढहती नजर आती है ताकि अधिकाधिक व्यक्ति और संस्कृतियाँ एक-दूसरे के घनिष्ठ एवं निकटस्थ सम्पर्क में आ सकें। इस सम्बन्ध में सर्वाधिक महत्वपूर्ण बात यह है कि आजकल एक ऐसी नवीन चेतना का उदय हो रहा है, जिसके कारण विश्व के सभी राष्ट्र-राज्य एक जगह मिलजुल बैठकर मानव जीवन की दुष्कर समस्याओं जैसे-पर्यावरण का क्षरण, सामाजिक सुरक्षा, एक उपग्रही सूचना व्यवस्था की स्थापना, उपभोग और उपभोक्तावादी, एक समान वैश्विक स्वरूपों का उदभव, एक विश्ववादी सामान्य जीवन शैली की स्वीकारोक्ति, एड्स एवं अन्य बीमारियों और स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं, मानवीय सुरक्षा के प्रयास, विश्व-व्यापार संगठन, राष्ट्र संघ और संयुक्त राष्ट्र संघ जैसी संस्थाओं का सभी देशों तक प्रचार-प्रसार, वैश्विक, राजनीति एवं आर्थिक व्यवस्थाओं का उद्भव, मानवाधिकारों का सभी देशों तक प्रचार-प्रसार, वैश्विक मंदी, बेरोजगारी, महिलाओं का शोषण, बच्चों का यौन शोषण, मानव-तस्करी, बाल-भ्रूण की समस्या, गरीबी, भुखमरी, सामाजिक-विस्थापन की समस्या, अपराध, धर्मों तथा संगीत में आदान-प्रदान का शुभारंभ जैसी अनेक सामाजिक मुददों के समाधान को खोजने तथा सामाजिक जीवन को अधिकाधिक खुशहाल और बेहतर बनाने के लिये एक-दूसरे के साथ सहयोग करके साथ-साथ निर्णय

करने लगे है। सामाजिक सांस्कृतिक, आर्थिक एवं राजनीतिक संबंधों, अपने-अपने राष्ट्र-राज्य से परे विश्वव्यापी स्तर पर विस्तार की इस प्रक्रिया को ही वैश्वीकरण का नाम दिया गया है।

अध्ययन का उद्देश्य

वैश्वीकरण वह प्रक्रिया जो दुनियाभार के सामाजिक सम्बन्धों को गहरा और घनिष्ट कर रही है। विश्व के वैश्विक परिदृश्य की समीक्षा वैश्वीकरण के अन्तर्गत ही संभव है। भारत भी वैश्वीकरण के प्रभाव से अछूता नहीं रहा है। इसका प्रभाव भारत में पूँजी, वस्तु, विचार और लोगों की आवाजाही पर भी पड़ा। जहाँ वैश्वीकरण से पूँजीवाद एवं उपभोक्तावाद को बढ़ावा मिला है, वहीं समाज में कई क्षेत्रों में चुनौतियाँ भी हैं। प्रस्तुत् शोध ग्रन्थ का मुख्य उद्देश्य यही है कि वैश्वीकरण के दौर में सामाजिक चुनौतियों का तर्क पूर्ण विश्लेषण किया जाय।

साहित्यावलोकन

दोषी (2003) का मानना है कि वर्तमान समय में मानव जीवन के लगभग सभी पक्ष अपने निवासी देश से हजारो और लाखों मील दूर स्थित संगठनों की गतिविधियों और सामाजिक ताने-बाने से प्रभावित होने लगे हैं। गिडेन्स (1999) का कहना है कि आधुनिकता का बहुत बड़ा परिणाम वैश्वीकरण है। यह इसलिये कि वैश्वीकरण में समय (Time) और स्थान (Space) को सामाजिक जीवन में नये सिरे से परिभाषित किया गया हैं। गिडेन्स इसे समय-स्थान दूरीकरण कहते हैं। दोषी एवं जैन (2005) का कहना है कि वैश्वीकरण मुख्यतः संसाधनों के ऊपर आधिपत्य को बढ़ाने की प्रवृत्ति को परिलक्षित करता हैं, जिसमें स्वार्थपरता का भाव निहित होता है, जबकि 'वैसुधैव कुटुम्बकम' त्याग और निस्वार्थता के भाव से गर्भित एक भावना है।

सामाजिक एवं सांस्कृतिक मुददे

वैश्वीकरण के सामाजिक सांस्कृतिक मुददे अधिक जटिल है क्योंकि इसके अन्तर्गत हम लगभग सम्पूर्ण मानव जीवन को सम्मिलित करते हैं। गिडेन्स ने कहा कि वैश्वीकरण एक प्रकार से दुनिया भर के लोगों का सामाजिक सम्बन्धों का एक ताना-बाना है। दूर दराज क्षेत्रों में रहने वाले लोगों के व्यवहार पर दुनियाभर का प्रभाव देखने को मिलता है। आदिकाल के आने से पहले धर्म का वैश्वीकरण सबसे अधिक था। जब आधुनिक युग आया तब प्रजातंत्र और पंूजीवाद आया। बुद्वि संगतता, शिक्षा और विज्ञान में धर्म के वैश्वीकरण को हाशिये पर ला दिया। आज की संस्कृति की उपज पंूजीवाद करता है। पूंजीवाद अर्थव्यवस्था का बहुत बड़ा प्रभाव संस्कृति पर पड़ा है। इसे हम ऐतिहासिक स्तर भी देख सकते हैं। अब जब आर्थिक गतिविधियों का वैश्वीकरण हो रहा है, तो संास्कृतिक रूपान्तरण का भी एक नया दौर आ रहा है। विश्व भर में सार्वभौमिक सांस्कृतिक उत्पाद पैदा हो रहे हैं। इसका तात्पर्य है कि संस्कृति का वस्तुओं की तरह उत्पाद हो रहा है। संस्कृति ने अन्तर्राष्ट्रीय और घरेलू पर्यटन को बढ़ावा दिया है। पहले लोग विदेश यात्रा अध्ययन या खोज के लिये किया करते थे। अब पर्यटन व्यापार और व्यवसाय का एक अंग बन गया है। इस प्रकार से संस्कृति का उत्पादन तीव्रता से हो रहा है और मनुष्य के सम्पूर्ण सामाजिक जीवन का संस्कृतिकरण हो रहा है। वैश्वीकरण में भौतिक विनिमय स्थानीय हो रहा है, राजनीतिक सम्बन्ध अन्तर्राष्ट्रीय हो गये है और प्रतीकात्मक विनिमय वैश्वीय बन गये है। वास्तविकता यह है कि वैश्वीकरण ने सामाजिक-व्यवस्था और स्थान के सम्बन्धों को नये सिरे से परिभाषित किया है। भौतिक विनिमय जिससे हम व्यापार कर व्यवस्था, वस्तुओं के उत्पाद और श्रमिकों के पगार में देखते हैं, सरलता से बदले जा सकते हैं। उनका विनिमय हो सकता है, क्योकि हम सबसे मिलकर अपने निर्णय ले सकते है। इसी तरह का भौतिक वैश्वीकरण आज के इस मीडिया समाज में जरा भी कठिन नहीं होता। राजनीतिक विनिमय को हम सुरक्षा, नियंत्रण, निगरानी वैधता और प्रभुसत्ता के क्षेत्र में देख सकते हैं। वैश्वीरकण अपने सम्पूर्ण लक्षणों और मुददों में बहुत वृद्व है और इसने दुनिया का कोई कोना नहीं छोड़ा जहॉ इसका प्रभाव देखने को नहीं मिले। ऐसा लगता है कि इसके प्रतिरोध के होते हुये भी इसे अनदेखा करना मुश्किल है।

आर्थिक मुददे

आर्थिक वैश्वीकरण नें वास्तव में आज दुनिया में एक नई वर्ग-व्यवस्था स्थापित कर दी है। आज एक अन्तर्राष्ट्रीय वर्ग-व्यवस्था हमारे सामने हैं जिसमें एक राष्ट्र-राज्य के वर्ग दूसरे राष्ट्र-राज्य के साथ जुड़ गये है। वैश्वीय आर्थिक सम्बन्धों को स्थापित करने में व्यापार, निवेश, उत्पादन, वित्तीय-विनिमय, श्रमिक स्थानान्तरण, अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक सहयोग एवं सुरक्षा तथा संगठनात्मक व्यवहार बहुत बड़ी भूमिका है। कार्लमार्क्स का कहना था कि पंूजीवाद प्रत्येक स्थिति में अपना विस्तार करना चाहता है और आवागमन तथा संचार सुविधाओं के विस्तार के साथ प्रत्येक युग में पूंजीवाद अपना विस्तार करेगा। निश्चित रूप से पंूजीवाद आर्थिक-वैश्विकरण का एक सशक्त साधन है। यह पंूजीवाद ही है जो वित्तीय बाजारों, वस्तुओं, श्रमिकों और विनिमय संस्थाओं को स्थापित करता हैं। विश्व व्यापार, अन्तर्राष्ट्रीय श्रम विभाजन, वित्तीय बाजारों का वैश्वीकरण, प्रवासी श्रमिक वर्गों का अन्तर्राष्ट्रीयकरण तथा वैश्विक अर्थ व्यवस्था आर्थिक वैश्वीकरण की विशेषतायें हैं।

राजनीतिक मुददे

राजनीतिक वैश्वीकरण के अन्तर्गत वैश्वीय मुददों का राष्ट्रीयकरण हो गया है। राज्य के कई परम्परागत अधिकार क्षेत्र उसके हाथ से निकल गये हैं। परम्परा से राष्ट्र-राज्य सुरक्षा, संचार, आर्थिक व्यवस्था अपने अधिकार क्षेत्र में समझे जा रहे थे। अब इन क्षेत्रों का समन्वयन अर्न्राष्ट्रीय स्तर पर होने लगा है। राष्ट्र-राज्यों की प्रभुसत्ता बड़े राजनीतिक संगठनों के साथ जुड़ गई है। मानव अधिकारों का अन्तर्राष्ट्रीयकरण हो गया है। अब दुनिया में कहीं भी जब अधिकारों (स्वास्थ्य शिक्षा, भौतिक कल्याण और स्वंय के शरीर पर नियंत्रण) का हनन होता है, तो मानव अधिकारों की संस्थायें सक्रिय हो जाती है। यह सक्रियता देश की गोपनीयता को भी लांघ जाती है। यदि मानव-अधिकार व्यक्ति को सम्पूर्ण मानव समाज के साथ जोड़ते है तो हमारे इस भू-मण्डल (च्संदमज) के साथ पर्यावरण जुड़ता है और यदि इसका कहीं भी क्षरण होता है, तो इससे हम सबका सरोकार है। वैश्वीकरण के अन्तर्गत सम्पूर्ण विश्व में एक सामान्य प्रवृत्ति दृष्टिगोचर होती है। जनसंख्या बराबर बढ़ रही है। अधिक वृद्धि में कहीं कोई नहीं है। उत्पादन अधिक गति से बढ़ रहा है। लेकिन इस विकास के साथ प्रदूषण भी बिना रूकावट के बढ़ रहा है। इस प्रदूषण ने मानवीय जीवन के अस्तित्व को संकट में डाल दिया है। आर्थिक एवं राजनीतिक वैश्वीकरण की अपेक्षा संास्कृतिक वैश्वीरकण अधिक हुआ है।

चुनौतियाँ

यह सही है कि वैश्वीकरण के संबंध में आज दुनिया भर में विश्व संस्कृति, विश्व समाज, विश्व सुरक्षा आदि के नारे पूरे जोर-शोर के साथ दिये जा रहे हैं। लेकिन इसकी कुछ समस्यायें भी है। वैश्वीकरण का सर्वाधिक प्रतिकूल प्रभाव सामाजिक सुरक्षा, परिवार और संस्कृति पर पड़ा है। वैश्विक संचार-व्यवस्था ने सांस्कृतिक विविधता और बहुलवाद को तहत-नहस कर दिया है। इसके अतिरिक्त बढती हुई गरीबी और बेरोंजगारी, तीसरी दुनिया की खेती पर हमला, जेव सम्पदा की चोरी (बायोपाइरेसी) हिंसा और वर्चस्वी संरचनाओं में वृद्वि, पर्यावरण क्षरण को रोकने के लिये, महिलाओं के साथ होने वाले भेदभाव पर पाबन्दी लगाने के लिये और वित्तीय सहायता देने वाले संगठन और आन्दोलन उभरकर आ रहे हैं। हथियारों की गैर-कानूनी आवाजाही सम्पूर्ण विश्व में हो रही है। कुछ सीमाओं पर पहुंच गया है। एड्स की बीमारी सम्पूर्ण विश्व तक पंहुच गई है। अन्तर्राष्ट्रीय पर्यावरण-क्षरण विश्व की समस्या बन गई है। मानवीय सुरक्षा की समस्या ने इतना व्यापक बना दिया है कि समृद्व देशों के लिये शांति की सांस लेना कठिन हो गया है। तीसरी दुनिया के बच्चों का शोषण अपनी पराकाष्ठा पर पहुंच गया है। वैश्वीकरण की प्रक्रिया अपने निर्माणावस्था से गुजर रही है। इसे चुनौती दी जाने लगी है। विकासशील देश में इसके विरोध में आन्दोलन हो रहे हैं। वैश्वीकरण ने स्थानीय संस्कृति के विस्तार और विकास को कमजोर कर दिया है। देखा जाये तो वैश्वीकरण ने कई राष्ट्र-राज्यों को सांसत में डाल दिया है। वैश्वीकरण के विरोध में कई विकासशील देशों मे ंसंगठित आवाज उठाई जाने लगी है। यह विरोध आर्थिक और संास्कृतिक वैश्वीकरण क्षेत्र में दिखाई देता है।

आज वैश्वीरकरण ने सम्पूर्ण संसार को अपना शॉपिंग संेटर बना दिया है। बहुराष्ट्रीय निगम, उत्पादन की तकनीक, वित्तीय पंूजी, और बाजार पर अपना नियंत्रण रखते है। वे पहले स्थानीय संस्कृति का अध्ययन करते हैं और तब संस्कृति की आवश्यकता के अनुसार उत्पाद करते है। वैश्वीकरण ने एक प्रकार के नये आर्थिक और सांस्कृतिक साम्राज्यवाद को उत्पन्न किया है। कुछ विद्वान इसे मीडिया का साम्राज्यवाद भी कहते है। इन निगमों ने सारी दुनिया में उपभोक्ता समाज तैयार किया है।

वैश्वीकरण को सभी देशों ने अपना लिया हो, ऐसा नही है। कुछ देश तो आर्थिक विकास में हाशिये पर आ गये है। इन देशों का घरेलु उद्योग ठप्प हो गया है। वैश्वीकरण में तकनीकी शिक्षा (ज़दवूसमकहम ज्मबीदवसवहल) बहुत महत्वपूर्ण है। प्रत्येक राष्ट्र न तो नवीन तकनीकी तंत्र का पर्याप्त ज्ञान रखता है और नहीं इस पर ढेर सारी पूंजी का निवेश कर पता है। परिणाम वह पिछड़ जाता है। अपना देशी बाजार ही उसके हाथ से फिसल जाता है। इसी कारण पिछड़े हुए देश वैश्वीकरण का प्रतिरोध करते हैं। विकसित देश भी वैश्वीकरण से बच निकले हों, ऐसा नही है। जापान जैसे देश ने ऑटोमोबाइल के उत्पादन में अमेरिका को पछाड़ दे दी है। चीन ने एशिया के बाजार को अपने उत्पादन से भर दिया है। इस सब में तकनीकी ज्ञान और पंूजी निवेश निर्णायक कारक है। जिन देशों के पास इनका अभाव है, वे संगठित/असंगठित रूप से इसका विरोध करते है।

मानव विकास रिपोर्ट के निष्कर्ष (यू0न0डी0पी0 2001)

मानव विकास रिपोर्ट ने वैश्वीकरण के दुष्परिणामों को निम्न बिन्दुओं में रखा है -

1. वैश्वीकरण ने मानव सुरक्षा को एक अजीब तरह की धमकी दी है। एक ओर तो धनी और समृद्ध देश हैं जिनमें पूरी राजनीतिक स्वतंत्रता है, स्थायित्व है और दूसरी तरफ गरीब देश हैं जिनमें विपन्नता है और नागरिक अधिकार नाम मात्र को भी नही है। अमेरिका जैसे धनाढ्य देश में आधी रात को आदमी सिर ऊँचा उठा के चहलकदमी कर सकता है उसकी पूरी सुरक्षा है। दूसरी ओर स्वतंत्रता से अपने दैनिक काम-काज चला पाना नागरिकों के लिए दूभर हो जाता है। कब किस समय गाज आ पड़े, इसकी कोई सुरक्षा नहीं।
2. यह सही है कि नई सूचना और संचार तकनीकी ने वैश्वीकरण की प्रक्रिया के द्वारा लोगों को एक सूत्रमें बांध दिया है, पर इसका एक यह भी परिणाम निकला है कि दुनिया के कुछ लोग अपने आप को पृथक् समझते है। इस विभाजन के कारण भी वैश्वीकरण का विरोध होने लगा है।
3. वैश्वीकरण के दौरान यह स्थिति है कि धनाढ्य देश ज्ञान पर अपना नियंत्रण रखने लगे है। इसके परिणामस्वरूप गरीब देश हाशिये पर आगये हैं। वे अपने आपको असुरक्षित समझने लगे हैं। उदाहरण के लिये थाईलैण्ड जैसे देश में अफ्रीका की तुलना में अधिक सेल्युलर फोन है, दक्षिण एशिया जहॉ दुनिया के 23 प्रतिशत लोग रहते हैं, एक प्रतिशत से कम लोगों के पास टेलीफोन है।
4. लगभग 80 प्रतिशत बेबसाइट में अंग्रेजी भाषा चलती है जबकि अंग्रेजी बोलने वालों में दस व्यक्तियों में एक व्यक्ति है।
5. वैश्वीकरण ने तकनीकी यंत्र की जो सुविधाएं प्रदान की हैं, उनके प्रयोग ने दुनिया को दो भागों में बांट दिया है। रिपोर्ट कहती है: वैश्वीकरण ने दो समानतर दुनियाएँ खड़ी कर दी है। एक दुनिया वह है जिसके पास आय है, शिक्षा है और शैक्षिक सम्पर्क है, उसके लिये सूचना प्राप्त करना सरल और सुविधाजनक है, ओर दूसरी दुनिया वह है कि जो अनिश्चित है, धीमी है और जिसके लिये सूचना तक पहुंचना महंगा है। जब ये दोनों दुनियाएँ साथ-साथ रहती है और प्रतियोगिता करती हैं तो निश्चित रूप से गरीबों की दुनिया पिछड़ जाती है।
6. वैश्वीकरण के लाभ और अधिक लाभ धनवान देशों और धनवान लोगों की झोली में गये है। आम देश आम आदमी को ठगे-ठगे और बिखरे-बिखरे दिखाई देते है।

निष्कर्ष

उपर्युक्त विवेचना के आधार पर यह कहा जा सकता है कि वैश्वीकरण के कारण बाजार, अर्थव्यवस्था, मीडिया की शक्ति तथा सूचना तकनीकी तंत्र ने स्थानीय संस्कृति के सामने पहिचान की बहुत बड़ी समस्या पैदा कर दी है। वैश्वीकरण केवल व्यापार, बाजार और मीडिया ही नहीं है। इसके अन्तर्गत प्रजातंत्र और पूॅजीवाद भी है। यही कारण है कि जब संास्कृतिक आधुनिकीकरण वैश्वीकरण के माध्यम से स्थानीय लोगों की संस्कृति पर आघात करता है, उसे चोट पहँुचाता है, उसकी भाषा, धर्म जीवन पद्धति और संस्कृति मूल्यों पर हमला करता है तो लोग तिलमिला उठते हैं। वैश्वीकरण अनिवार्यता बहुलवादी है यदि यह बाजारवाद का प्रणेता है तो यह एक नई संस्कृति के विकास का मध्यम भी है। इस प्रक्रिया की गतिशीलता परस्पर विरोधी है, यह जोड़ती है तो विखण्डित भी करती हैं। कुछ विरोधी मूल्यों के होते हुये भी आज दुनियाभर में विश्वसंस्कृति, विश्व समाज आदि के नारे पूरे जोर-शोर के साथ दिये जा रहे हैं। यह प्रक्रिया बड़ी शक्तिशाली है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. *गिडेन्स, एन्थोनी, सोशिलोलॉजी, पोलाइटी, 2001*
2. *दोषी, एस0एल0-आधुनिकता, उत्तर आधुनिकता एवं नव-समाजशास्त्रीय सिद्वांत रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर।*
3. *रावत, हरिकृष्ण- उच्चतर समाजशास्त्र विश्वकोष, रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर, 2011.*
4. *दोषी एवं जैन-समाजशास्त्र, नई दिशायें, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, जयपुर, दिल्ली।*
5. *ब्रोक अलरिच - रिस्क सोसाइटी टूवड्स ए न्यूक माडर्निटी,लंदन सेज, 1992.*
6. *गिडेन्स, एन्थोनी- रनवे वर्ल्ड: हाउस ग्लोबलाजेशन इज रिशेपिग आवर लाइब्स: प्रोफाइल्स बुक लिमिटेड 1999.*
7. *महाजन धर्मवीर एवं महाजन कमलेश-समाजशास्त्र, विवेक प्रकाशन, नई दिल्ली, 2015।*